Nai Dunia (Indore), 3rd September 2022, Page-02

इसरो के मिशन के लिए आइआइटी ने बनाया माडल

इंदौर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) पहली बार सूर्य का अध्ययन करने के लिए आदित्य एल-1 प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है। यह अगले साल भेजा जाएगा। अंतरिक्ष में देश के इस ऐतिहासिक कदम में आइआइटी इंदौर भी सहभागी हुआ है। आइआइटी की टीम ने अत्याधुनिक सौर पवन माडल बनाया है जो अंतरिक्ष में चुंबकीय तरंगों (सौर हवा) के गुणों की भविष्यवाणी करने में सक्षम है।

आइआइटी इंदौर। ● फाइल फोटो

अंतरिक्ष में सौर हवा के गुणों की भविष्यवाणी करने में सक्षम है माडल

आइआइटी इंदौर के खगोल विज्ञानी डा. भार्गव वैद्य ने बताया कि आइआइटी इंदौर और पीआरएल अहमदाबाद के खगोल शास्त्रियों की एक टीम ने यह माडल बनाया है जो अंतरिक्ष में चुंबकीय तरंगों के गुणों की भविष्यवाणी कर सकता है। सूर्य से ये तरंगें पृथ्वी की ओर आती हैं। इनकी गर्मी और तीव्रता को नापने का माडल तैयार किया गया है। इसकी मदद से आदित्य एल-1 यान को मदद मिलेगी। ये सौर धाराएं पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती हैं, हेलिओस्फीयर में अंतरिक्ष मौसम चालकों के प्रसार को नियंत्रित करती हैं, जो भू-चुंबकीय तूफान गतिविधियों को प्रेरित करती हैं। यह माडल पूरी तरह भारतीय तरीके से तैयार किया गया है। इसे तैयार करने वाले दल में डा. वैद्य, पीएमआरएफ पीएचडी छात्र प्रतीक मयंक और भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद में एएसपीईएक्स पेलोड के सह-लेखक और प्रमुख जांचकर्ता प्रोफेसर दिब्येंदु चक्रवर्ती शामिल हैं।

शोधकर्ताओं ने यह माडल सौर सतह के अवलोकन के आधार पर बनाया है। ये अवलोकन गोंग वेधशाला से आते हैं, जिसके छह अलग-अलग शहरों में स्टेशन हैं। उदयपुर में सौर वेधशाला भी इसमें शामिल है। उच्च गति वाली चुंबकीय तरंगों की उत्पत्ति और धीमी धाराओं के साथ इसके मिलन, गतिशील सौर गतिविधि द्वारा संचालित होती है।

प्रोफेसर दिब्येंदु चक्रवर्ती ने कहा हमने अजीमुथल और मेरिडियन दिशाओं में एसआइआर की कुछ विशिष्ट विशेषताओं का अध्ययन किया है। एएसपीईएक्स पेलोड में तीन दिशात्मक अवलोकन क्षमता है और उन विशेषताओं का पता लगा सकता है।